हिन्दी विभाग

दिनांक 07/04/2020

स्नातक द्वितीय (II)

पत्र संख्या - 03

बैनाम कुमार
(अतिथि शिक्षक)

प्रश्नः- छायावाद का दार्शनिक आधार पर विचार करें।

उत्तरः- एक ओर नवजागरण और नवजागरण के आविर्भाव की राष्ट्रीय - सांस्कृतिक परिस्थितियाँ तो दूसरी ओर स्वच्छंदतावादी चेतना के सहारे पश्चिम की प्रेरणा - छायावादी कविता के आविर्भाव, इसके स्वरूप निर्धारण और इसके दार्शनिक आधार के निर्माण में इन सबकी अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही। यही कारण है कि छायावादी कविता किसी एक दार्शनिक धरातल पर खड़ी नहीं है वरन इसके दार्शनिक धरातल का विस्तार वेदान्तवाद, नववेदान्तवाद और प्रकृति अद्वैतवाद से लेकर पश्चिमी के उदारवादी चिन्तन स्वच्छंदतावाद, मार्क्सवाद और मनोविश्लेषण-वाद तक है।

छायावादी कवियों में विषय की सबसे अधिक विविधता हमें निराला के यहाँ देखने को मिलती है। निराला की 'राम की शक्ति पूजा' पर अगर वेदान्तवादी अद्वैतवादी चिन्तन का प्रभाव है तो दूसरी ओर अन्याय जिधर है उधर शक्ति की मूल समस्या उस वेदान्तवाद को मानवतावाद के करीब ले जाती है। वहाँ पर निराला विवेकानंद के वेदान्ती मानववाद जिसे नववेदान्तवाद भी कहा जाता है। नववेदांतवाद वेदान्ती अद्वैतवादी चिन्तन की सामाजिक ~~परिवेश~~ परिप्रेक्ष्य में व्याख्या करता है इसीलिए यह अपने स्वरूप में मानवतावादी है। इसी नववेदान्तवाद को उनके 'कुकुरमुत्ता' कविता में भी अभिव्यक्ति मिली है

यह रीती के साथ विचार शुद्धि के प्रश्न को लेकर चलता है और इसीलिए मार्क्सवाद की सीमाओं की स्वीकारोक्ति निराला को चिन्तन और दर्शन के आवरण से बाहर निकाल कर मानवतावाद के धरातल पर प्रतिष्ठित कर देती है। उनकी 'भिक्षुक', 'दान', 'बादलराग' जैसी कविताएँ कई बार शोषित-उत्पीड़ित वर्गों के प्रति उनकी प्रतिबद्धता को मार्क्सवाद से लेजाकर जोड़ देती है, लेकिन 'कुकुरमुत्ता' में वे इसकी धज्जियाँ उड़ाकर रख देते हैं। संदर्भ चाहे 'शक्तिपूजा' का हो या 'कुकुरमुत्ता' का दोनों की जगहों पर निराला की समन्वयवादी चेतना अपने शिखर पर है जिसका सम्बन्ध अगर उनके वैष्णव संस्कार से जुड़ता है, तो तुलसी की समन्वयवादी चेतना से भी।

प्रसाद की कविताएँ एक भिन्न दार्शनिक धरातल पर खड़ी हैं। प्रसाद पर शैवागम अद्वैतवाद का प्रभाव है। इसी के धरातल पर वे 'कामायनी' में भारतीय सांस्कृतिक चिन्तन परम्परा की दुखवादी और आनंदवादी धाराओं को एक दूसरे से संबद्ध करते हुए समरसतावादी दर्शन की प्रतिष्ठा करते हैं—

समरस थे जड़ या चेतन, सुंदर साकार बना था
चेतना एक विलसती आनंद अखंड बना था।

लेकिन, प्रसाद की कविता का दार्शनिक धरातल यहीं तक सीमित नहीं है। उनकी नारी चेतना पर यदि मध्ययुगीन नारी-आदर्शों का प्रभाव है जिसका संबंध तद्युगीन संदर्भ में गाँधीवाद से जाकर जुड़ता है तो

दूसरी ओर पश्चिम के उदार नारीवादी चिन्तन से भी। 'कामायनी' में तो प्रसाद डार्विन के विकासवाद के प्रभाव को भी स्वीकार करते हैं और मार्क्सवाद के प्रभाव को भी। लेकिन अन्ततः श्रद्धा इसे मानवतावाद के उपकरण में तब्दील कर देती है।

स्पष्ट है कि यहाँ पर आकर अद्वैतवाद और मानववाद परस्पर घुल-मिलकर नववेदान्तवाद की ओर उन्मुख होने लगती है। इसके लिए प्रसाद को अपनी वैयक्तिक वेदना को विश्व वेदना में तब्दील करना पड़ा। इसका प्रमाण है - 'आँसू' का दूसरा संस्करण, जिसमें प्रसाद अपनी वैयक्तिक वेदना पर आध्यात्मिकता के आवरण से चढ़ाते हैं - सबका निचोड़ लेकर तुम / सुख से सूखे जीवन में

छायावादी कविता पूर्वी दर्शन और पाश्चात्य चिन्तन के बीच एक संतुलन साधती है। यह यौन संबंधों के संदर्भ में बंद भारतीय समाज से उपजी हुई कुंठा है जो इन्हें नारी के संग में गंगा स्नान की सी अनुभूति के लिए उत्प्रेरित करती है। इसे फ्रायड के मनोविश्लेषणवाद के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है.

तुम्हारे छूने में था प्राण / संग पावन गंगा स्नान।

प्रस्तुतकर्ता
बेनाम कुमार (अतिथि शिक्षक)
हिन्दी विभाग
राजनारायण महाविद्यालय हाजीपुर
(BRABU MUZAFFARPUR)
मो० नं० - 8292271041
ईमेल - benamkumar13@gmail.com

दिनांक
02/09/2020